साम्बराम एवंदानादिचनुष्कं योगं उक्तपंचविषप्रयोगसाधनांपादनं ॥ तावभीनधानधी प्रसिद्धी प्रधोगाप्रयोगकाली प्रमद्धिय कालेन चिवै भद्धनं व्यात्मधाच जिनेदि यो मुखा निषेवतेनुतिष्टति ॥ सञ्यसनेनामुयात् ॥ ११ ॥ १२ ॥ किन्त सएक्ग्राजापिभवनीत्वाह ॥ हिनानुवंधमिति ॥ यउच्यमानगुणैः सचिवैःसह हिनानुवंध गुन्नहुर्य है। किरुलमालोक्य विचार्य आलगःकार्यकुर्यात्सराजाभवतीत्यन्वयः॥ १३॥ अथोत्तममंत्रिविभीषणादिमतमपहाय दुर्मविभिन्नेत्रणमूलः सर्वानर्थइत्याह ॥ अनिभन्नाय उपप्रदानंसांवंचभेदंकालेचविकमं॥योगंचरक्षसांश्रेष्ठतावुभोचनयानयो॥ ११॥ कालेधर्मार्थकामान्यःसंमंच्यस्चिवैःसह॥

्रान्तिक्षानात्वज्ञात्वविद्विद्वित्वित्व स्थित्विद्विद्वित्वित्व स्थित्विद्विद्वित्वित्व स्थित्विद्विद्वित्वित्व स्थित्विद्वित्वित्व स्थित्विद्वित्वित्व स्थित्विद्वित्वित्व स्थित्विद्वित्व स्थित्व स्थिति स्थिति स्थिति स्याप्त स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्याप्त स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्याप्त स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्याप्त स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्याप्त स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्याप्त स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्याप्त स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्याप्त स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्याप्त स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्य स्याप्त स्याप्य स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्य स्याप्त स्

अशास्त्रविद्वषामित्यस्यैवव्याख्या अर्थशास्त्रानभिज्ञानामिति ॥ अथापि विषुलांश्रियं केवलंहठादेवेच्छतां वचनंनकार्यमित्यन्वयः ॥ १४ ॥ १५ ॥ राजभिर्मेत्रकाले दु र्भित्रिनिरासःसर्वथांकार्यइत्याह ॥ अहितंचेति ॥ धार्ष्यात्साहसायेजल्पंति नेमंत्रिबाह्याअवश्यंकर्तव्याः ॥ १६ ॥ विनाशयंतइति ॥ केचनदुर्मत्रिणःभर्तारंत्वांनाशयंतः ॥ 🔮 हेतीशता तवनाशनिमित्तं विपरीतानिकत्यानिकारयंति ॥ केचित्सुमंत्रिणोदुर्मेत्रफलं तवनाशंपश्यंतः बुधैःसर्वज्ञैस्तवशत्रुभिःसहिताः स्वरक्षणंकुर्वतीतिशेषः ॥ १७ ॥ सुमं त्रित्वदुर्मंत्रित्वनिर्णयःकथंतत्राह ॥ तानिति ॥ मंत्रनिर्णयेचिकीर्षिते तान्मित्रसंकाशान् अमित्रान् ॥ उपसंहितान् उत्कोचादिनाशत्रुवशीकृतान्सचिवसंकाशान्व्यवहारेण 🌋 तत्तन्मंत्रजार्थिकियालक्षणव्यवहारेण जानीयात् ॥ १८॥